E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2024; 6(1): 77-78
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 02-01-2024
Accepted: 11-02-2024

Dr. Bharat Das Vaishnav
Professor, Department of Political Science, MPPG Govt. College, Chittorgarh, Rajasthan, India

Corresponding Author:
Dr. Bharat Das Vaishnav
Professor, Department of Political Science, MPPG Govt. College, Chittorgarh, Rajasthan, India

भारत की विदेश नीति में लोकलुभावन मोड़

Dr. Bharat Das Vaishnav

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2024.v6.i1b.305

सारांश
यह अध्ययन भारतीय विदेशनीति के सर्वाधिक लोकप्रिय पहलू का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य सरकार द्वारा स्थानीय विचारधारा को आत्मसात करने हेतु अपनाई जाने वाली रणनीतियों पर प्रकाश डालना है। वर्तमान भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में मोदी सरकार की विदेश नीति में बदलता विश्व क्रम और भारतीय राजनीतिक प्रभाव इस अध्ययन के उद्देश्यों को प्रेरित करता है।

कूटशब्दः मोदी सरकार, विदेश नीति, लोकलुभावनवाद, भारतीय कूटनीति

प्रस्तावना
वर्तमान वैश्विक कूटनीति लोकलुभावनवाद का अभिन्न अंग बनती जा रही है। किसी भी राष्ट्र की विदेशनीति की लोकप्रियता का आंकलन उस राष्ट्र के राष्ट्रप्रमुख की लोकप्रियता के समानांतर मापी जा सकती है। लोकतांत्रिक राष्ट्रो की विदेश नीति को प्रभावित करने में राष्ट्र प्रमुखों के वक्तव्य, उनकी कार्यशैली एवं स्थिर राजसत्ता का अहम योगदान रहता है।

इसके महत्त्वपूर्ण उदाहरणों के रुप में हमने देखा है कि ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री ऋषि सुनक हों, भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हों या फिर पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप आदि जैसे शक्तिशाली राजनेताओं द्वारा अनेकों मसलों पर अत्यंत ही चर्चित एवम जनलोकप्रिय नीतियों की श्रृंखला का निर्माण किया गया जो आम जनमानस में बेहद लोकप्रिय हुई। इसी दिशा में भारतीय राजनीतिक परिदृश्य भी समय समय पर अनेकों ऐतिहासिक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। जिनमें स्वतंत्रता पूर्व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से लेकर स्वतंत्रता के पश्चात अनेकों राजनीतिक दल व पार्टियां अस्तित्व में आती रही हैं, जिनके राजनीतिक अस्तित्व में भारतीय विदेश नीति के मूल स्वरुप को सदैव परिवर्तित करने का काम किया है।

पंडित नेहरू को छोड़कर कुछ ही भारतीय प्रधानमंत्रियों ने अपनी विदेश नीति के बारे में नरेंद्र मोदी जितनी तीव्र और निरंतर बहस को प्रेरित किया है। हालांकि कुछ हद तक, यह उस राजनीतिक ऊर्जा के कारण संभव हुआ है जो उन्होंने और उनकी भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली सरकार ने मई 2014 के आम चुनाव में अपनी पहली शानदार जीत के बाद अंतरराष्ट्रीय संबंधों के संचालन में लाई थी। जबकि अपने पूर्ववर्ती प्रधानमत्री मनमोहन सिंह के विपरीत, मोदी एक बहुत ही उत्साही राजनेता के रुप में साबित हुए, उन्होंने अपने पहले कार्यकाल के दौरान उतनी ही विदेशी यात्राएँ कीं जितनी कि डा. सिंह ने अपने कार्यकाल के एक दशक में की थीं।

इसी के साथ कई हाई-प्रोफाइल शिखर सम्मेलनों में भाग लिया, और उनके साथ संबंध स्थापित करने का लक्ष्य रखा। चीन, जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ-साथ दक्षिण एशिया में भी उनके समकक्ष अनेकों कूटनीतिक समूहों की सदस्यता एवं स्थापना के लक्ष्यों ने मोदी सरकार की विदेश नीति को सदैव चर्चा का विषय बनाए रखा है।

अपने प्रथम कार्यकाल के पड़ोसी देश नेपाल की यात्रा हो या सुपर पावर अमेरिका में How the Modi कार्यक्रम में उनकी विदेश नीति के सफल प्रयासों का गुणगान न केवल भारतीय राजनीतिक परिदृश्य की सफलता को इंगित करता है बल्कि वैश्विक राजनीति में भी उनकी लोकप्रियता में का ग्राफ विश्व के सबसे प्रभावशाली राजनेताओं की तुलना में सर्वोच्च शिखर पर है। भारत के पड़ोसियों के साथ बेहतर संबंध बनाने के लिए नए सिरे से प्रयास सहित अन्य पहल शुरू की, जिसे 'नेबरहुड फर्स्ट' नाम दिया गया। इसने हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा प्रदान करने और बुनियादी ढांचे में सुधार करने के साथ-साथ मध्य पूर्व से मध्य और दक्षिण एशिया से दक्षिण पूर्व एशिया तक फैले राज्यों के साथ अपने रक्षा और राजनयिक संबंधों को बढ़ाने में एक प्रमुख भूमिका निभाने का वादा किया। गौरतलब है कि मोदी सरकार ने भारतीय विदेश नीति को भारत की परंपराओं के अनुरूप सिद्धांतों के एक समूह में फिर से स्थापित करने और दुनिया में अपनी स्थिति को

बहाल करने का वादा किया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रमुख शक्तियों सहित सभी द्वारा इसकी स्थिति और हितों का सम्मान किया जाए।

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य वर्तमान भारतीय राजनीतिक परिदृश्य (मोदी सरकार) में विदेश नीति के लोकलुभावन स्वरूप का विश्लेषण करना है।

अध्ययन प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत द्वितीयक आंकड़ों (पूर्ववर्ती शोध, प्रमुख समाचार पत्र, चर्चित पुस्तकों आदि) से प्राप्त ज्ञान को आधार बनाया गया है।

भारतीय काल खंड में विदेश नीति का लोकलुभावन स्वरूप

भारत के पहले प्रधानमंत्री, जवाहरलाल नेहरू को भारत की स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में भारतीय विदेश नीति का मुख्य वास्तुकार माना जाता था, और नेहरूवादी नीतियां कुछ हद तक आज भी कायम हैं। हालाँकि, लगातार प्रधानमंत्रियों, जिनमें गठबंधन सरकारों का नेतृत्व करने वाले लोग भी शामिल हैं, ने भारतीय विदेश नीति को आकार देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक नेता और राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका और 2014 में नरेंद्र मोदी के सत्ता में चुने जाने के बाद भारतीय विदेश नीति में बदलाव पर प्रकाश डालते हुए, कुछ विद्वानों ने 'मोदी सिद्धांत' के बारे में बात करना शुरू कर दिया, और बताया कि कैसे मोदी की विदेश नीति 'अलग' है ।किस प्रकार मोदी ने भारत की विदेश नीति को 'पुनर्जीवित' किया है।

पंत (2016) के अनुसार, मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति में एक नई गतिशीलता और व्यावहारिकता के संकेत देखता है। इसी प्रकार हॉल (2015) का मानना है कि यद्यपि मोदी एक नई ऊर्जा लेकर आए हैं, लेकिन उनकी विदेश नीति के उद्देश्य अटल बिहारी वाजपेयी और मनमोहन सिंह द्वारा अपनाए गए उद्देश्यों के समान हैं। उनका मानना है कि, हालांकि मोदी ने अतीत से कुछ बदलाव किए हैं, लेकिन उन्होंने 'भारत की विदेश नीति के उन्मुखीकरण में मौलिक बदलाव नहीं किया है।'

भारत की वर्तमान विदेश नीति की सबसे खास विशेषता यह है कि इसमें पूर्व की सभी नीतियों की अपेक्षा जोखिम लेने की प्रवृत्ति सबसे अधिक है। भारत अपनी दशकों पुरानी सुरक्षात्मक नीति को बदलते हुए कुछ हद तक आक्रामक नीति की ओर अग्रसर हो रहा है। डोकलाम में भारत की कार्रवाई और वर्ष 2016 में उरी आतंकी हमलों के बाद पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक भारतीय नीति के प्रमुख उदाहरण हैं। कई जानकारों का मानना है कि भारत की वर्तमान विदेश नीति में विचारों और कार्रवाई की स्पष्टता दिखाई देती है। बदलते वैश्विक राजनीतिक परिवेश में भारत अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिये किसी भी औपचारिक समूह पर निर्भरता को सीमित कर रहा है। भारत ने अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाए रखने का एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया है और अमेरिका तथा रूस के साथ भारत के संबंध इस तथ्य के प्रमुख उदाहरण हैं।

पिछले दशकों के मुताबिक ही, वर्तमान समय में भी भारतीय विदेश नीति की प्रमुख चिंताओं और चुनौतियों में से एक यह है: चीन से कैसे निपटा जाए? संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बीच राजनीतिक तनाव और दक्षिण एशिया में बढ़ती चीनी आक्रामकता का भारत पर बड़ा प्रभाव पड़ रहा है। मोदी सरकार के कालखंड में ही भारत और चीन के बीच गंभीर राजनीतिक और सैन्य तनाव देखा गया है। 2017 में भूटान के डोकलाम में भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच 73 दिनों तक सैन्य गतिरोध चला था। अधिक गंभीरता से, 2020 में भारतीय और चीनी सैनिक लद्दाख की गलवान घाटी में भिड़ गए, जब 20 भारतीय और, जैसा कि 2021 में चीन ने स्वीकार किया, चार चीनी कर्मियों की जान चली गई (बीबीसी, 2021)।

तब से भारतीय और चीनी कमांडरों और अधिकारियों के बीच कई दौर की बातचीत हो चुकी है; अभी भी सीमा पर तनाव कम नहीं हुआ है। मुख्य रूप से चीनी चुनौती से निपटने के लिए, भारत चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (QUAD) को दृढ़ता से बढ़ावा दे रहा है जिसमें जापान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया भी शामिल हैं। चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने QUAD को एक 'बड़ा सुरक्षा जोखिम' करार दिया, जिसमें 'अमेरिका के प्रभुत्व और आधिपत्य प्रणाली को बनाए रखने के लिए विभिन्न समूहों के बीच टकराव पैदा करने की क्षमता है'।

निष्कर्ष

यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि भारतीय विदेश का बदला हुआ स्वरूप एक सशक्त एवम स्थिर राजनीतिक सत्ता का परिणाम है। वर्तमान परिदृश्य में वैश्विक स्तर पर भारतीय विदेश नीति की चर्चा का प्रमुख केंद्र भारतीय प्रधानमत्री की मुखरता के रूप में दिखाई पड़ता है। मोदी सरकार के कालखंड में जी 20 जैसे सफल आयोजनों हो या वैक्सीन मैत्री के तहत विश्व के अनेकों देशों तक कोरोना की वैक्सीन को उपलब्धता हो इन सभी प्रयासों ने न केवल भारतीय जनता को ही बल्कि विदेशी नागरिकों को भी पूरी तरह से प्रभावित करने का काम किया है। यह अध्ययन इसी दिशा में वर्तमान विदेशनीति की वास्तविक स्थिति को जांचने हेतु ए क प्रयास मात्र है ।

संदर्भ सूची

1. पंत, एचवी. भारतीय विदेश नीति: एक सिंहावलोकन । मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस 2016.
2. हॉल, आई. क्या भारत की विदेश नीति में उभर रहा है 'मोदी सिद्धांत'? ऑस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ़ इंटरनेशनल अफेयर्स, 2015;69(3):247-252. https://doi.org/https://doi.org/10.1080/10357718.2014.1000263
3. बीबीसी. (2021, 19 फरवरी) "लद्दाख: चीन ने भारत सीमा संघर्ष में सैनिकों की मौत का खुलासा किया"। 21 अक्टूबर, 2021 को https://www.bbc.com/news/world-asia-56121781
4. अनुराधा एम चेनॉयकमल मित्र चेनॉय, भारत की विदेश नीति में बदलाव और शक्ति की गणना, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम. 42, अंक क्रमांक 35, 01 सितम्बर 2007
5. भारतीय विदेश नीति- बदलाव की ओर, दृष्टि आईएएस, 30 Oct 2019
6. अमित रंजन, भारत की विदेश नीति: बदलाव, समायोजन और निरंतरता, The Commonwealth Journal of International Affairs, 2022, 111.